

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

भाग - 3

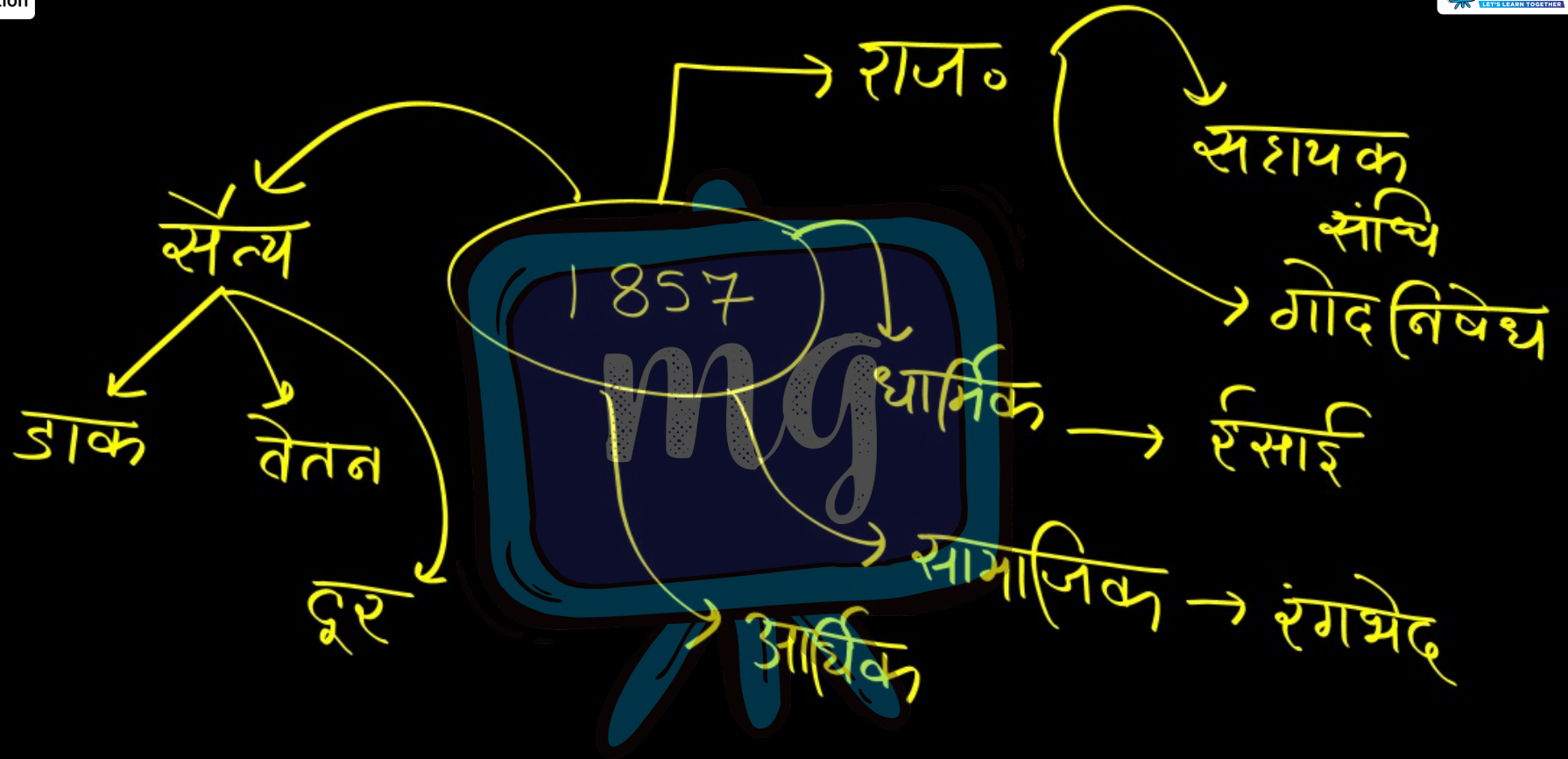
आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय - 10

विद्रोही और राज

भाग - 2

Pritesh Joshi

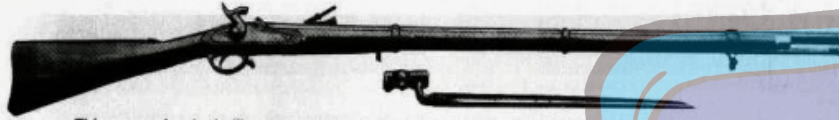


तात्कालिक कारण :-

- नई एनफील्ड राईफिल्स में प्रयोग होने वाले चर्बी लगे कारतूसों (सूअर तथा गाय की चर्बी) का प्रयोग।
- हिन्दू तथा मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला।

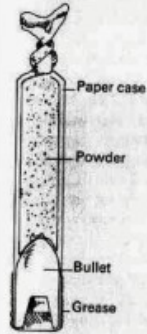


The Enfield rifle



This percussion-lock rifle was produced in the British Ordnance Factory at Enfield near London. It came into use in the British army in 1853. Shortly afterwards it was sent out for trials for the Company army in India. The 'rifling' on the inside of the barrel made the shot more accurate and gave the weapon a greater range. It was an enormous improvement on the Brown Bess smooth-bore flintlock musket which had been the standard weapon of all British forces since the early eighteenth century.

A greased cartridge



How it was loaded



1. The soldier tears open the end of the cartridge with his teeth.



2. He pours the powder down the muzzle of his rifle. Then he thrusts the bullet, still wrapped in the cartridge paper which makes it a tight fit, into the muzzle.

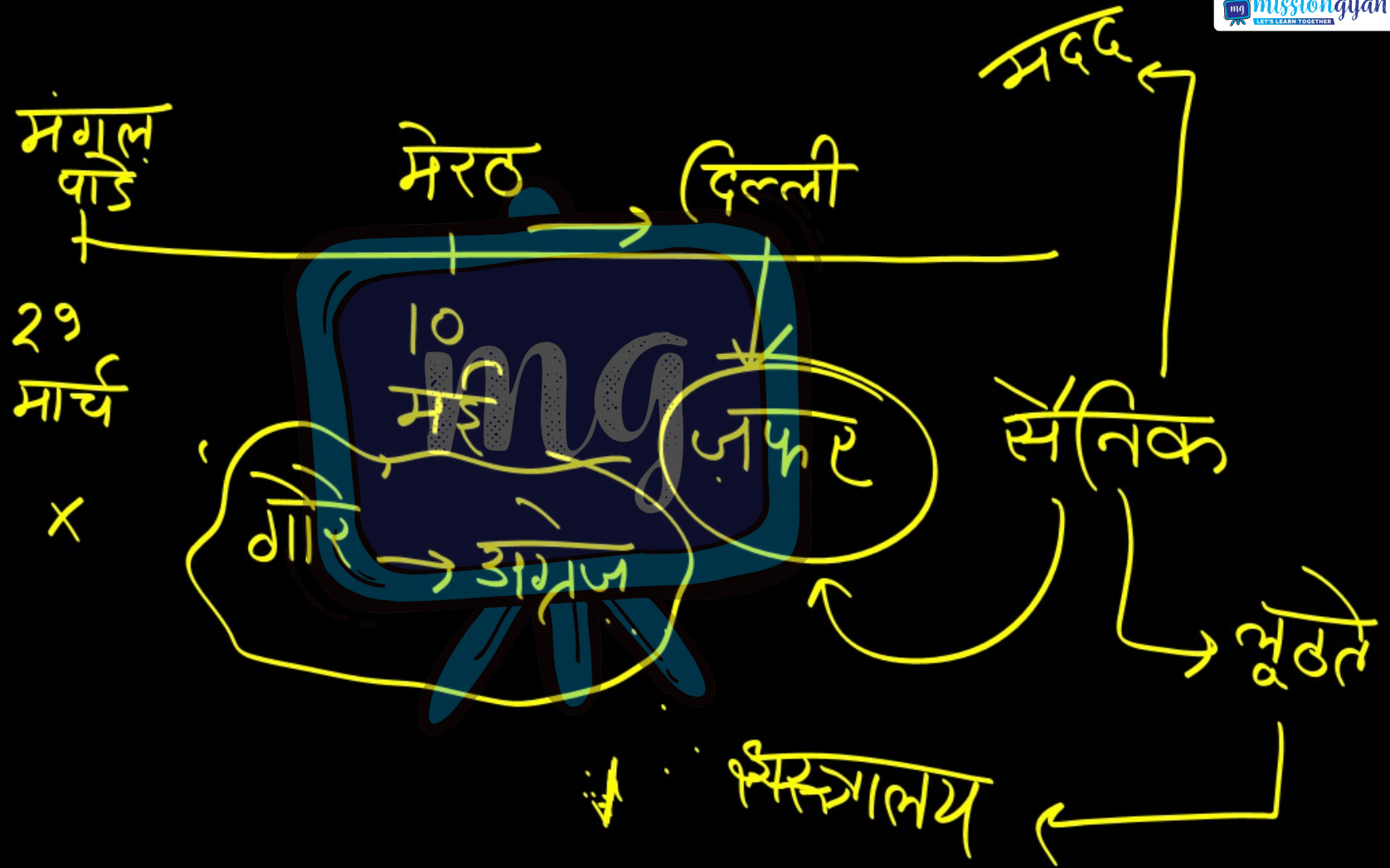


3. He takes his ramrod from its slot beneath the rifle barrel, and rams paper, bullet and powder to the bottom of the barrel.

ब्राउन बेश
राइफल

एलफील्ड राइफल

चर्बी युक्त कारतूस
इस्तेमाल होते थे



• तोप का गोला दागे
मार + बिगुल बजाकर

↓
विद्रोह की शुरुआत

सैन्य विद्रोह कैसे शुरू हुए?

✶ प्रारम्भ - 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से प्रारम्भ हुआ।

✓ दिल्ली में विद्रोह ✓

✶ नेतृत्व - बहादुरशाह II / बहादुर शाह जफर

✶ जैसे-जैसे विद्रोह की खबरें एक शहर से दूसरे शहर पहुंचती गयी वैसे-वैसे सिपाही हथियार उठाते गये।

✶ सिपाही किसी विशेष संकेत के साथ अपनी कार्यवाही शुरू करते थे।

✶ सबसे पहले उन्होंने शास्त्रागार पर कब्जा किया और सरकारी खजाने को लूटा।

Q. 1857-विद्रोह की
शुरुआत किस
प्रकार हुई?

→ महानगर / गरीब

✗ विद्रोह में आम लोगों के भी शामिल हो जाने के साथ
साथ विद्रोह का दायरा फैल गया। ✓

✗ साहूकार और अमीर भी विद्रोहियों के गुस्से का शिकार
बनने लगे। ✓

ब्रिटिश शासन ताश के किले की तरह बिखर
गया।

→ स्वतंत्र

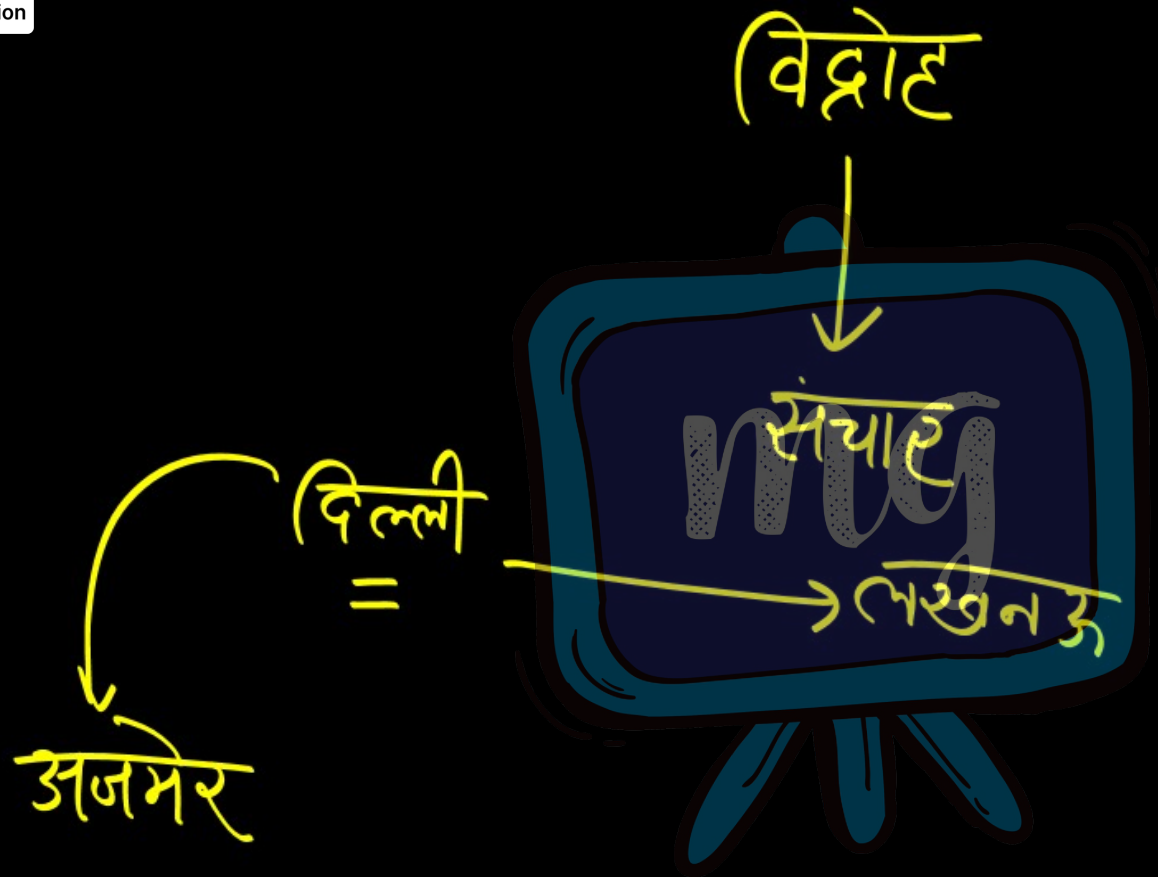
असामान्य समय में सामान्य जीवन

विद्रोह के महीनों में शहरों में क्या हुआ? उथल-पुथल के उन दिनों में लोग अपनी जिंदगी कैसे जी रहे थे? सामान्य जीवन किस तरह प्रभावित हुआ? विभिन्न शहरों की रिपोर्टों से पता चलता है कि सामान्य गतिविधियाँ अस्त-व्यस्त हो गई थीं। दिल्ली उर्दू अख़बार 14 जून 1857 की इन रिपोर्टों को पढ़िए :

यही हालात सब्जियों और साग (पालक) के भी हैं। लोग इस बात पर शिकायत कर रहे हैं कि बाजारों में कद्दू और बैंगन तक नहीं मिलते। आलू और अरबी अगर मिलती भी हैं तो बासी, सड़ी जिसे कुँजड़ों (सब्जी बेचने वाले) ने रोक कर (जमाकर) रखा हुआ था। शहर में स्थित बाग-बगीचों से कुछ माल चंद इलाकों तक पहुँच जाता है लेकिन गरीब और मध्यवर्ग वाले उन्हें देखकर बस होठों पर जीभ फिरा कर रह जाते हैं (क्योंकि वे चीजें खास लोगों के लिए ही हैं)।

➔ इन दोनों रिपोर्टों तथा उस दौरान दिल्ली के हालात के बारे में इस अध्याय में दिए गए विवरणों को पढ़ें। याद रखें कि अख़बारों में छपी ख़बरें अकसर पत्रकार के पूर्वाग्रह या सोच से प्रभावित होती हैं। इस आधार पर बताएँ कि दिल्ली उर्दू अख़बार लोगों की गतिविधियों को किस नज़र से देखता था?

... यहाँ एक और चीज़ पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे लोगों को बड़ा नुकसान हो रहा है। मामला यह है कि पानी भरने वालों ने पानी भरना बंद कर दिया है। गरीब शुरफ़ा (शरीफ लोग) खुद घड़ों में पानी भरकर लाते हैं और तब जाकर घर में खाना बनता है। हलालख़ोर हरामख़ोर हो गए हैं। कई दिनों से बहुत सारे मोहल्लों में कोई आमदनी नहीं हुई है और यही हालात बने रहे तो गंदगी, मौत और बीमारियाँ शहर की आबो-हवा ख़राब कर देंगी और शहर महामारी की गिरफ्त में आ जाएगा, यहाँ तक कि आस-पास के इलाके भी उसकी चपेट में आ जाएँगे।



विद्रोह → अगला ?
तारीख ?
लोका ?
हमला ?
मूर्तों ?
आर्थिक ?

पंचायत

लाइन

→ पंचायत

संचार के माध्यम

उदाहरण :-

7वीं अवधि इंग्लैंड
इन्फैंटरी (कारतूस)
“ हमने अपने धर्म की
रक्षा के लिए फैसले
लिखे हैं, और 48
नेटिव इन्फैंटरी के दुःख
का इंतजार है ”

✍ विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच अच्छा संचार
बना हुआ था।

✍ रात में सिपाहियों की पंचायतें जुड़ती थीं और उनमें
सामूहिक रूप से फैसले लिये जाते थे।

ये योजनाएँ कैसे बनायी गयीं? ✓

योजनाकार कौन थे? ✓

✍ मौजूदा दस्तावेजों के आधार पर इन सवालों के
सीधे सीधे जवाब देना कठिन है।

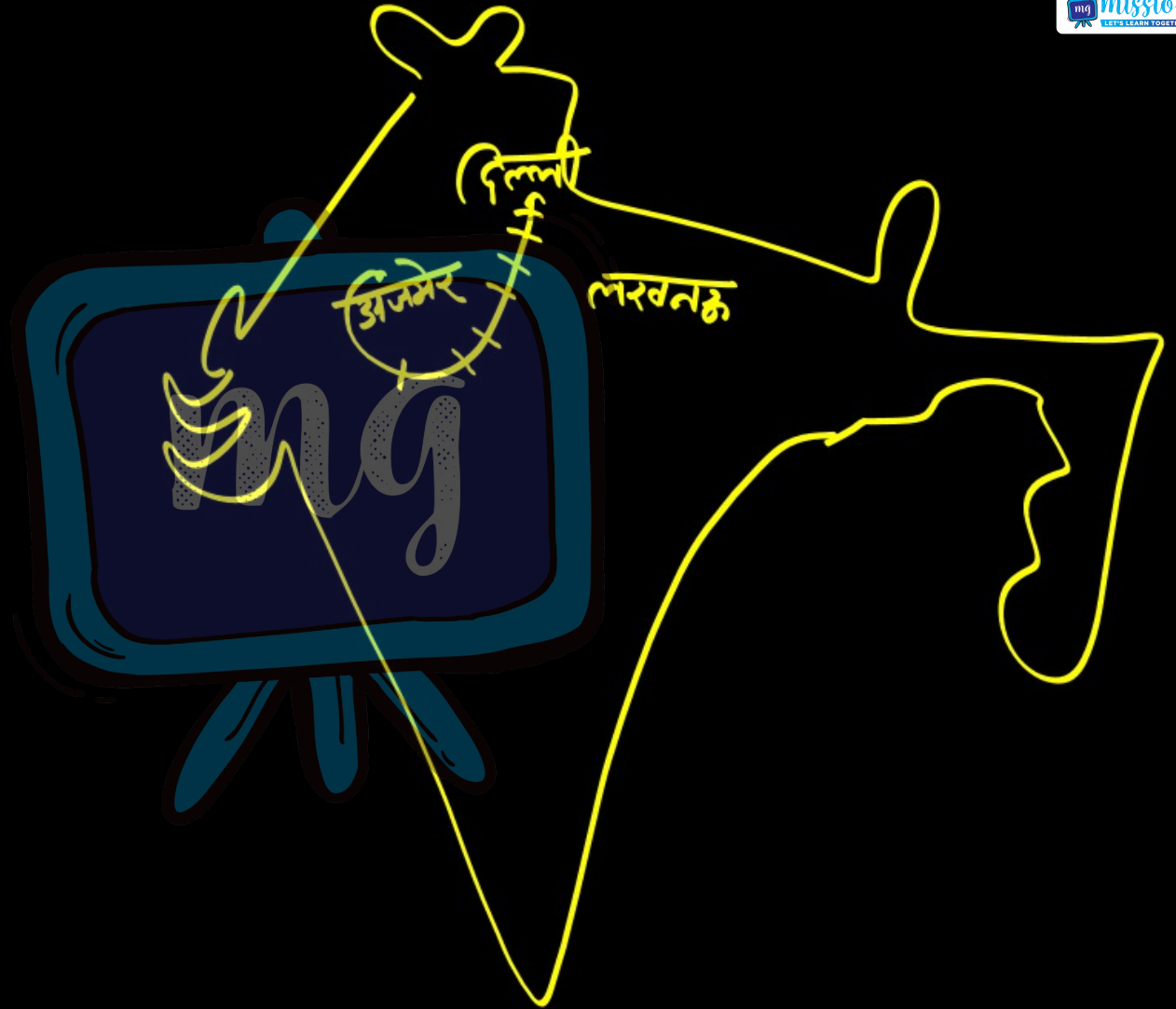


✍ संभवतया इस विद्रोह की योजना लंदन में बनायी गयी थी। ✓ ✓ ✓

1. अजीमुल्ला खान - नाना साहब के सलाहकार ✓
2. रंगो जी बापू - सतारा के राजा के सलाहकार ✓

✍ क्रान्ति का प्रतीक - कमल का फूल और रोटी ✓ ✓

✍ प्रारम्भ करने की तिथि - 31 मई 1857 ✓



सिस्टन और तहसीलदार

विद्रोह और सैनिक अवज्ञा के संदर्भ में सीतापुर के देसी ईसाई पुलिस इंस्पेक्टर फ्रांस्वाँ सिस्टन का अनुभव हमें बहुत कुछ बताता है। वह मजिस्ट्रेट के पास शिष्टाचारवश मिलने सहारनपुर गया हुआ था। सिस्टन हिंदुस्तानी कपड़े पहने था और आलथी-पालथी मारकर बैठा था। इसी बीच बिजनौर का एक मुस्लिम तहसीलदार कमरे में दाखिल हुआ। जब उसे पता चला कि सिस्टन अवध में तैनात है तो उसने पूछा, “क्या ख़बर है अवध की? काम कैसा चल रहा है?” सिस्टन ने कहा, “अगर हमें अवध में काम मिलता है तो जनाब-ए-अली को भी पता चल जाएगा।” इस पर तहसीलदार ने कहा, “भरोसा रखो, इस बार हम कामयाब होंगे। मामला काबिल हाथों में है।” बाद में पता चला कि यह तहसीलदार बिजनौर के विद्रोहियों का सबसे बड़ा नेता था।

Q. 1857 के विद्रोह की शुरुआत
कैसे हुई ?

Q. विद्रोह के दौरान साहूकारों
और अमीरों को नुकसान
क्यों पहुँचाया गया ?

Q. उदाहरण सहित समस्याओं
की विधेयियों में संघार
के माध्यम स्थापित थे?

Q. सैनिक विद्रोह की नीति
किस प्रकार बनाते थे?

